* **भूमिका** •• → यह सर्वमान्य सत्य है कि परिवर्तन संसार का नियम है। समाज में होने वाला जो परिवर्तन अच्छाई की तरफ होता है, वह हमेशा विकास को जन्म देता है। इस प्रकार परिवर्तन का संबंध विकास के साथ भी माना जाता है। देशों को विकास के आधार पर तीन वर्गों में बाँटा जाता है।

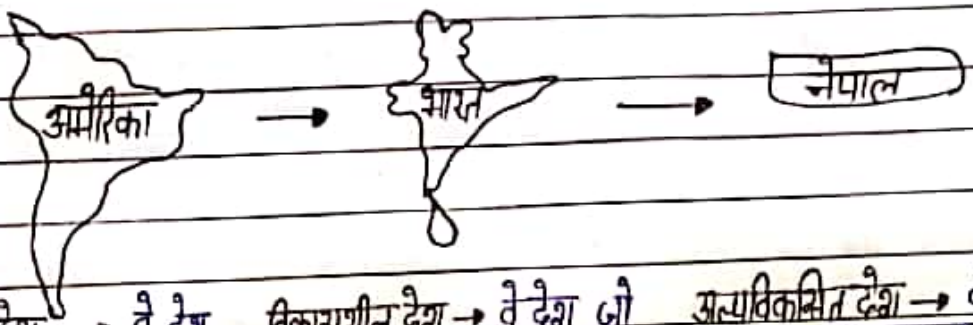

विकसित देश → वे देश जिन्होंने विकास के उच्च स्तर को प्राप्त कर लिया है जैसे → अमेरिका

विकासशील देश → वे देश जो विकास के उच्च स्तर को प्राप्त करने की राह पर है, जैसे → भारत

अल्पविकसित देश → वे देश जो अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, जैसे → नेपाल।

विकास शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1954 में M.T. शर्मा ने किया था

* **विकास का अर्थ** •• → विकास से अभिप्राय किसी देश में होने वाली उन्नति व प्रगति से है। अर्थात् जब कोई देश अपने नागरिकों की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ-साथ उन्हें उच्च स्तरीय जीवन की सुविधाएं प्रदान कराता है, उसे ही विकास कहते हैं।

→ इस प्रकार विकास की अनेकों परिभाषाएं हैं →

Scanned with CamScanner

परिभाषाएं :- →

* गैकेंटी के अनुसार : → "विकास उच्च स्तरीय अनुकूलन के प्रति अनुकूलन होने की स्थिति को कहा जाता है।"
* चैम्बर्स के अनुसार : → "विकास को एक ऐसी आर्थिक व राजनीतिक व्यवस्था की ओर अग्रसर समझा जा सकता है जिसमें उन समस्याओं का समाधान ढूंढने की क्षमता हो, जिनका उसे सामना करना पड़ता है।"
* एच० मिटल्मैन : → "विकास का अर्थ सामाजिक लक्ष्यों की पूर्ति के लिए प्राकृतिक और मानवीय संसाधनों के तर्क-संगत प्रयोग की क्षमता को बढ़ाना है।"

* लूसियन पाई → ने अपनी रचना "Aspect of political development" में विकास का गहन विवेचन करके इसके तीन लक्षण बताएं हैं → समानता, क्षमता, विभिन्नता।

विकास के लक्ष्य

* विकास एक लक्ष्य को प्राप्त करने मात्र नहीं है, अपितु यह एक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा संस्थाओं व संगठनों का निर्माण होता है। जो समाज में उत्पन्न समस्याओं को दूर करती है

(1) गरीबी, बेरोजगारी को दूर करना।
(2) कृषि, औद्योगिक विकास करना।
(3) प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करना।
(4) विकास के उच्च स्तर को प्राप्त करना।

Scanned with CamScanner

* गाँधी जी का मानना था कि यदि समाज का विकास करना है तो खुली प्रतियोगिता को समाप्त किया जाना जरूरी है, क्योंकि खुली प्रतियोगिता के कारण केवल विकासशील देशों की ही हानि होती है।

(1) कुटीर उद्योगों को बढ़ावा •• ⟶ गाँधी जी कुटीर उद्योगों का विकास करने के समर्थक थे, उनके अनुसार साधारण सी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उत्पादन का स्तर बड़े पैमाने पर नहीं, लेकिन अच्छी किस्म के उत्पादन

Scanned with CamScanner

था कि व्यक्ति का उचित विकास करने के लिए सभी व्यक्तियों को धार्मिक शिक्षा दी जानी जरूरी है।

(2) अस्पृश्यता का विरोध •• ⟶ गांधी जी जाति-पाति, धर्म आदि के आधार पर पर्याप्त अस्पृश्यता के विरोधी थे। उनके अनुसार ये संकीर्ण बुराईयां हैं, जो व्यक्ति के विकास के लिए बाधक हैं।

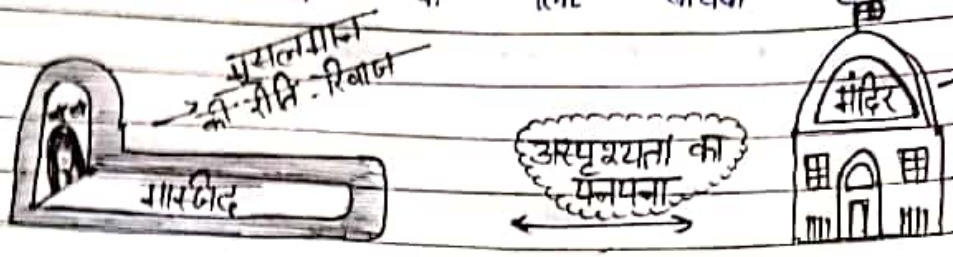

(3) समाज सुधार •• ⟶ गांधी जी समाज-सुधार के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि समाज का विकास करना है, तो समाज में घृणित बुराईयों, कुरीतियों, परंपरा को समाप्त किया जाना बहुत जरूरी है।

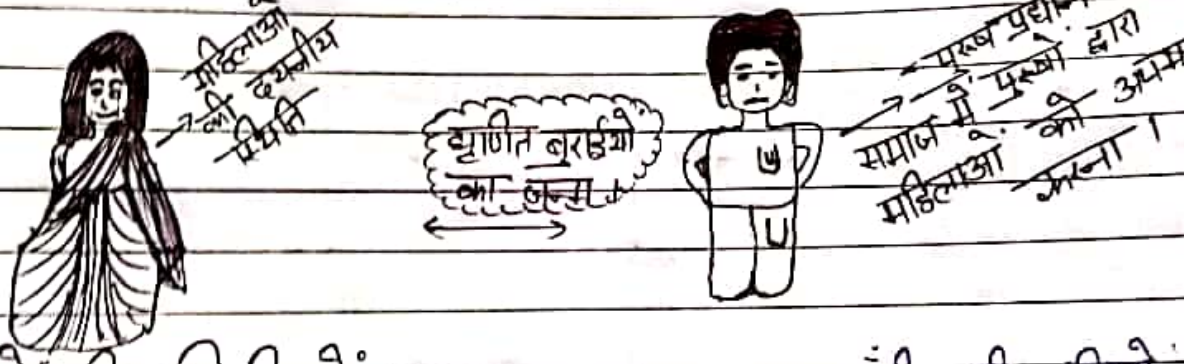

(4) स्त्रियों की स्थिति में सुधार •• ⟶ गांधी जी स्त्रियों के जीवन में व्याप्त घृणित बुराईयाँ जैसे → सती प्रथा, पर्दा प्रथा आदि के विरोधी थे। उनका मानना था कि स्त्री समाज का अभिन्न अंग है, स्त्रियों का विकास न करने से समाज का विकास भी नहीं हो सकता।

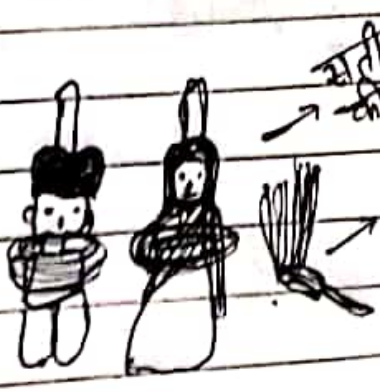

(3) कृषि को महत्व •• → गांधी जी औद्योगिक विकास की अपेक्षा कृषि का विकास करना चाहता था। वे कृषि में सुधार हेतु ज़मींदारी प्रथा का अंत करना, खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता लाने, अच्छे बीजों का प्रयोग करने का समर्थन करते थे।

→ इस प्रकार अच्छे बीजों का प्रयोग करके लोगो को कृषि पर आत्मनिर्भरता लाकर ही व्यक्ति अपने जीवन का विकास कर सकते हैं।

(4) बड़े पैमाने के उत्पादन के विरोधी •• → गांधी का मानना था कि बड़े पैमाने पर उत्पादन न करके आपित आवश्यकता के अनुसार उत्पादन किया जाए। गांधी जी खादी पहनने व बनाने का अधिक समर्थन करते थे।

राजनीतिक विकास के लिए गांधी के प्रयास

(1) राम-राज्य की स्थापना •• → गांधी जी एक ऐसे राज्य की स्थापना करना चाहते थे जो नैतिक आधार पर गठित हो, जिसमे आदर्शों को अधिक महत्व दिया जाए। अतः वे राम-राज्य की स्थापना के समर्थक थे।

(2) शक्ति का विकेन्द्रीकरण •• → गांधी जी शक्ति को अलग-2 स्तरों पर बांट देना चाहते थे। वे मानते है थे कि शक्ति का एक स्थान पर केन्द्रीत हो जाना निरंकुशवाद को बढ़ावा देता है। जैसे →

अगर ये सारी शक्तियां केन्द्र को दे दी जाएं, तो केन्द्र निरंकुशवाद हो जाएगा और तानाशाही सरकार का जन्म होगा।

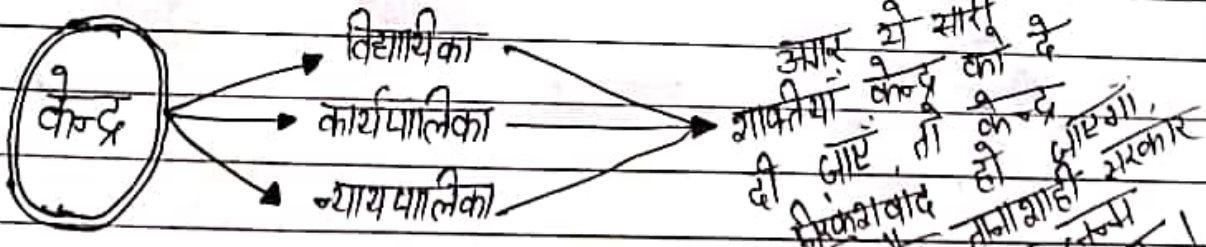

Scanned with CamScanner

गाँधी जी न तो कोई अर्थशास्त्री थे, और न ही उन्होंने विकास का कोई औपचारिक मॉडल प्रस्तुत किया था, पर वे सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। उन्होंने पाया कि विकास के अन्य मॉडल जहां भौतिक सुख को प्राप्त करने के लिए हैं, इसी कारण उन्होंने विकास का ऐसा मॉडल प्रस्तुत किया, जिससे भौतिक सुख के साथ-साथ आध्यात्मिक सुख भी प्राप्त किया जा सके।

विकास के विभिन्न पक्ष

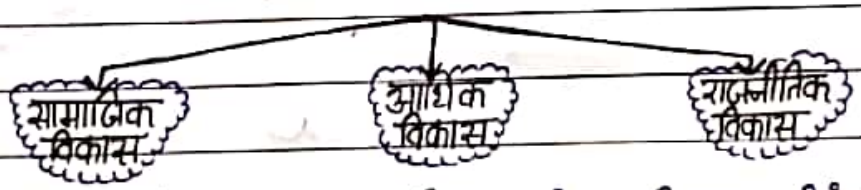

→ गाँधी जी "सर्वे भवन्तः सुखामीन" के सिद्धान्त में विचार करते हैं। वे ऐसे विकास को लागू करना चाहते थे, जिससे अधिक से अधिक व्यक्तियों को सुख प्राप्त हो सके।

सामाजिक विकास के लिए गाँधी के प्रयास

(1) बुनियादी शिक्षा •• → गाँधी जी बुनियादी शिक्षा सभी बच्चों को अनिवार्य व मुफ्त में देने का समर्थन करते थे। उनका मानना

Scanned with CamScanner

Page No. :

(3) पंचायतों के महत्व •• → गाँधी जी पंचायती राज की स्थापना का समर्थन करते है। उनका मानना है कि पंचायतों के द्वारा सभी को यथाशीघ्र सहज तथा सरल रूप में न्याय मिल सकता है।

→ भारत में 1977 में मोरारजी देसाई की सरकार द्वारा विकास के गाँधीवादी मॉडल को लागू करने का प्रयास किया गया।

CONCLUSION •• → भारतीय अर्थव्यवस्था को दृष्टि में रखते हुए "गाँधीयन मॉडल" भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद नेहरू का राजनीति में अधिक प्रभाव रहा, और "गाँधीयन मॉडल" को एक तरह से भुला दिया गया था।

Scanned with CamScanner